This question paper contains 4+1 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **4462**

Unique Paper Code : **205455** C

Name of the Paper : **(Aadhunik Kavya)**

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi Discipline**

Semester : **IV**

समय : 3 घंटे पूर्णांक : 75

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. छायावाद काव्य की प्रमुख विशेषताओं की चर्चा कीजिए । 15

अथवा

नयी कविता की सामान्य प्रवृत्तियों का परिचय दीजिए ।

2. निम्नलिखित क, ख या ग में से किसी **एक** प्रश्न का उत्तर दीजिए : 12

(क) 'यशोधरा' का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

अथवा

'यशोधरा' में अभिव्यक्त नारी भावना का विवेचन कीजिए ।

(ख) 'कुरुक्षेत्र' के आधार पर युधिष्ठिर का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

अथवा

'कुरुक्षेत्र' की मुख्य समस्या युद्ध की विभीषिका है'—स्पष्ट कीजिए ।

(ग) 'महाप्रस्थान' के आधार पर द्रोपदी का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

अथवा

'महाप्रस्थान व्यवस्था की अमानवीयता को अभिव्यक्त करता है'—स्पष्ट कीजिए ।

P.T.O.

3. निम्नलिखित क, ख या ग में से किसी **एक** काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10

(क) मूल्य और मानवी उदात्तताएँ

जब सार्वजनिक जीवन में

हो जाती हैं शेष

तभी होता है युद्ध

युद्ध का घोष ।

अथवा

सामने वाला यदि आवेग में

पशु हो गया हो

तो विवेक के रहते

प्रतीक्षा करो

उसके पुनः मनुष्य होने की ।

(ख) स्वयं सुसज्जित करके क्षण में,

प्रियतम को प्राणों के पण में,

हमीं भेज देती हैं रण में,

क्षात्र धर्म के नाते ।

सखि वे मुझसे कह कर जाते ।

अथवा

सभी सुन्दरी बालाओं में मुझे उन्होंने माना,

सबने मेरा भाग्य सराहा, सबने रूप बखाना,

खेद किसी ने उन्हें फिर भी ठीक-ठीक पहचाना,

भेद चुने जाने का अपने मैंने भी अब जाना ।

(ग) चुराता न्याय को जो, रण को बुलाता भी वही है

युधिष्ठिर ! स्वत्व की अन्वेषणा पातक नहीं है ।

नरक उनके लिए जो पाप को स्वीकारते हैं,

न उनके हेतु जो रण में उसे ललकारते हैं ।

अथवा

जिस दिन वध को वध समझ जयी रोएगा,

आँसू से तन का रुधिर-पंक धोएगा,

होगा पथ उस दिन मुक्त मनुज की जय का,

आरम्भ भीत धरणी के भाग्योदय का ।

4. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 8+8+8=24

(क) भारतेन्दु की कविता 'अकाल' का अर्थ स्पष्ट कीजिए ।

(ख) जयशंकर प्रसाद रचित 'आंसू' की मूल संवेदना पर विचार कीजिए ।

(ग) निराला की कविता 'वह तोड़ती पत्थर' में अभिव्यक्त श्रम सौन्दर्य का चित्रण कीजिए ।

(घ) पंत की कविताओं में अभिव्यक्त प्रकृति-चित्रण का विवेचन कीजिए ।

(ङ) महादेवी वर्मा की कविताओं में वेदना भाव पर विचार कीजिए ।

(च) अज्ञेय की कविताओं के शिल्प का विश्लेषण कीजिए ।

(छ) केदार नाथ की कविता 'चन्द्र गहना से लौटती बेर' के भाव-सौन्दर्य का उद्‌घाटन कीजिए ।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** काव्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 7+7=14

(क) मैं अपलक उन नयनों से
निरखा करता उस छवि को
प्रतिभा डाली भर लाता
कर देता दान सुकवि को ।

(ख) ये उपमान मैले हो गये हैं ।
देवता इन प्रतीकों के कर गये हैं कूच ।
कभी बासन अधिक घिसने से मुलम्मा छूट जाता है ।

(ग) देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा छिन्नतार
देखकर कोई नहीं
देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खा रोई नहीं ।

(घ) आज नदी बिल्कुल उदास थी,

सोयी थी अपने पानी में,

उसके दर्पण पर–

बादल का वस्त्र पड़ा था

मैंने उसे नहीं जगाया

दबे पाँव घर वापस आया ।

(ङ) विस्तृत नभ का कोई कोना

मेरा न कभी अपना होना

परिचय इतना इतिहास यही

उमड़ी कल थी मिट आज चली ।